दिल्ली में जिसकी कम्पनी है, वो सुबह को उठता है तो पैसे दान करता है। कोई आकर पैसे ले जाते हैं या कपड़ा ले जाते हैं, सुना है। ऐसे दान बहुत (...) भोजन का भी अहमदाबाद है। एक संन्यासियों का मठ है जहाँ रोज़ खीरनी और पूड़ी फलाना क्या होता है, सुना है बाबा ने। ये तो देख करके आए होंगे, है कोई वहाँ? (किसी भाई ने कुछ कहा) तुम नहीं देखा है? (किसी ने कहा– जी बाबा) सुना भी नहीं है। बाकी कोई अहमदाबाद में है, मैंने सुना है कि रोज़ वहाँ भण्डारा लगता है। बस, लिमिटेड है। इतने की पूड़ी, इतने की खीर होते हैं। वो बनाते हैं। सुबह को आते हैं, वो खा करके चले जाते हैं। तो ये भी यहाँ भी (किसी भाई ने कहा– संन्यासियों के बहुत आश्रम) सन्यासियों का। है भी ये संन्यासियों का, कोई का। ऐसे बहुत बड़े–2 भण्डारे हैं। (किसी बहन ने कहा– काली कम्बली वाले...) वो वहाँ है (किसी ने कहा– हरियाणा–दिल्ली में) हरिद्वार के तरफ में। (किसी ने कहा–ऋषिकेश) वो तो कॉमन है। वो तो बहुत देख करके आए, बाबा ने खुद देख करके आए हैं। अभी वो तो सभी भक्तिमार्ग हुआ ना बच्ची। भूख है। वहाँ तो संन्यासी–वन्यासी होते ही नहीं हैं, उस दुनिया में; क्योंकि एक धर्म है। अभी देखो, सब कोई चाहते भी हैं कि एक मत हो। वन वर्ल्ड हो। वन नेशन हो। वन लैंग्वेज हो। सब चाहते हैं वन; क्योंकि थी ना। तो फिर चाहते हैं। बाप सुनते रहते हैं, बिचारे कहते भी रहते हैं; परन्तु पता नहीं। आगे चलकर उनको मालूम पड़ जाएगा। तुम भी ऐसे अगर लिखते रहेंगे, समझाते रहेंगे, जो माँगते हैं भारतवासी, जो भारत पहले था, वन गवर्मेन्ट इनकी। बस, दूसरी तो कोई गवर्मेन्ट नहीं थी। वन राज्य, वन लैंग्वेज, बस फिर शान्ति–सुख और उसको कहा ही जाता है–सुखधाम, स्वर्ग। अभी तो वो नहीं है। अभी तो नर्क है। उस समय में तो मनुष्य ही होंगे कितने। तो समझाने वाले बड़े चुस्त चाहिए। आजकल बाबा ज़ोर दे रहे हैं कि उनको समझाओ तो– जब ये भारत में थे, आदि सनातन देवी–देवताओं का राज्य, जबकि दूसरा कोई भी राज्य नहीं था, जिसको विष्णुपुरी भी कहा जाए देवी–देवताओं की, उसमें तो मनुष्य कितने होंगे और विचार करो– अभी कितने हैं! तो जभी बहुत हो गए हैं और तमोप्रधान भी हैं और नई दुनिया भी होनी है ज़रूर। तो ज़रूर फिर ये सभी विनाश होगी, महाभारत की लड़ाई (...)। महाभारत की लड़ाई बिगर कभी इतना विनाश हो भी नहीं सकता है; क्योंकि उस समय में ही कैलेमिटीज़ होती है। जैसे धर्म की स्थापना हो जाती है, उनके लिए स्वर्ग ज़रूर चाहिए। उनका विनाश ज़रूर होना चाहिए। अभी ये तो एक जैसे कि बात इज़ी हो जाती है। तो ये समझाना चाहिए उनको, उनके जो बड़े आते हैं कि बाकी 10 वर्ष हैं, इसके पहले बाप से वर्सा ले लेना है। ऐसे नहीं कि सुन करके खुश होना है कि स्वर्ग आता है। स्वर्ग आता है तो उनके लिए जो पुरुषार्थ करते हैं। बाकी जो पुरुषार्थ नहीं करते हैं, गॉडली स्टूडेण्ट नहीं पढ़ते हैं; क्योंकि भगवानुवाच्य– मैं तुझे राजयोग सिखलाता हूँ। अभी हम कहते हैं कि भगवानुवाच्य–हमको राजयोग सिखलाया। अभी आप आय करके सीखेंगे, ब्राह्मण बनेंगी या बनेंगे, तो राजयोग सीखेंगे। अब ब्राह्मण या ब्राह्मणी न बनेंगी तो राजयोग कैसे सीखेंगे; परन्तु इतना पता नहीं क्या है कि प्रदर्शनी में पकड़ते नहीं हैं गले से समझाने के लिए या तो पकड़ते हैं, फिर शायद उनको लगता नहीं है। ऐसे कोई बुद्धि तमोगुणी है या लॉकप है, गॉडरेज का लॉक है जो बुद्धि खुलती नहीं बिल्कुल ही। ऐसे हाँ–2, बस वो जो सुनते हैं उसमें मीठे अच्छे अक्षर, खुशी तो सुन करके– हाँ, ये तो बहुत अच्छा है। आपका तो समझाना बड़ा अच्छा है। और तो कोई भी ऐसे समझा नहीं सकते हैं। बस, यहाँ तक। लिखेगा तो भी ऐसे ही लिखकर जाएगा– समझानी बड़ी अच्छी है। बाकी समझा धूर भी नहीं फिर। हाँ, अभी ऐसे नहीं फिर बाबा कहेगा– धूर नहीं, फिर भी निमित्त बन जाते हैं प्रजा बनने में; क्योंकि आगे फिर भी तो समझना है

ना बच्चे। तो प्रदर्शनी अभी अहमदाबाद में वो तो तुम्हारी चली। वो तो प्रदर्शनी पिछाड़ी प्रदर्शनी, लिट्रेचर, ये चित्र वगैरह सुधरते जाएँगे। बड़ी–2 प्रदर्शनी होती रहेंगी, बड़े–2 भभके से। देखो, विचार कहता है– दिन–प्रतिदिन ऐसे हम चित्र बनाने का कोशिश करते हैं और उसमें दिन–प्रतिदिन समझानी बहुत क्लीयर होती रहेगी। झट समझ जाएगा, बरोबर हम सभी नर्कवासी हैं। कोई की ताकत नहीं है संन्यासी वगैरह, जो कोई कह सके कि हम नर्कवासी नहीं हैं; क्योंकि अब कलहयुग में हैं। नर्कवासी इनका ये धर्म स्थापना हुआ जबकि रजोगुण था। अभी तो तमोगुण है, तो ज़रूर पुनर्जन्म लिया तभी तो इतने संन्यासी हुए हैं ना। तो ये सभी इतना विशाल बुद्धि का ज्ञान (...) तो थोड़े बच्चे हैं ना बच्चे। सब तो नहीं ना। अच्छा, न होने के कारण इतना उठाय भी नहीं सकते हैं। तो इतना थोड़ा..., जब बहुत हो जाएँगे तुम बच्चे और होशियार भी होते जाएँगे और वो आते भी जाएँगे बहुत पीछे पिछाड़ी वाले, तो वो समझते जाएँगे फिर। भले पहले वाले ने इतना समझा और छोड़ दिया। पिछाड़ी वाले आएँगे, वो जास्ती समझेंगे। ऐसे जास्ती समझते–2 (...) स्थापना तो होनी ही है। आया है बाप। इसीलिए तो आए हुए हैं ना कि ये आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करने। करनी भी है संगमयुगे। कहते भी हैं– हम संगमयुगे आ करके करता हूँ। ऐसे तो हो नहीं सकता है कि सतयुग में करते हैं या कलियुग में करते हैं। नहीं, संगमयुगे। तो संगमयुग का साक्षात्कार चाहिए– पिछाड़ी और आगे का। तो पिछाड़ी–आगे का तो तुमको अभी साक्षात्कार पूरा बैठा हुआ है अच्छी तरह से। संगमयुग की महिमा भी बहुत है। बेहद के इस संगमयुग को ही वास्तव में गाया हुआ है–पुरुषोत्तम युग। जैसे इस संगमयुग को बेहद का तैसे उन्होंने भी वो कुम्भ का मेला देखो हद का बनाय दिया और पानी का बनाय दिया। तो कोई की बुद्धि में बैठे और अच्छी तरह से बैठे, तो नम्बरवार ड्रामा के प्लैन अनुसार जैसे कल्प ... बैठा है बुद्धि में, जिस–2 की बुद्धि में, जितना–2 जिस समय बैठा है, हम वो कहते हैं कि ड्रामा के प्लैन अनुसार इस समय तक ऐसे–2 इन सबमें बैठता जाता है। ...बच्चे जानते हैं कि हमारी पढ़ाई में अभी 8/9 बरस हैं। ज़रूर कुछ और ही सीखना है। जहाँ तक सीखें वहाँ तक हम सिखलाते आते हैं। .....और ज़रूर जभी अच्छी तरह से समझेंगे तो फिर वो जो एक से दो, दो से चार, तो ये झाड़ बनता तो रहता है ना बच्चे। बरस–2 जब तुम झाड़ को देखेंगे तो नए पत्ते उसमें लगते रहेंगे हर एक चोटी में, झाड़ के टाल के... डार के ही कहो, आई मिन डारी छोटे के बुबल कहो। (किसी ने कहा– टाल) तैसे ये भी झाड़ बड़ा होता जाता है ड्रामा के प्लैन अनुसार। इसलिए इस बात में कोई भी अपन को कोई संशय या कोई भी विचार नहीं है; क्योंकि जो कुछ भी होता है सेकेण्ड ब सेकेण्ड, जो पास्ट हुआ सेकेण्ड वो ड्रामा। जो कुछ भी एक्टीविटी चली वो ड्रामा के प्लैन अनुसार और ड्रामा को अपन जान गए हैं। दुनिया में तो कोई भी नहीं जानते हैं बिल्कुल ही। हम जितना हो सकते हैं (...), जैसे बाबा समझाया था ना बच्चे कि जब कोई लड़ाई लगती है (...)। बड़ी भारी लड़ाई लगी थी ना। तो सब जो भी छोटे थे, उन्होंने सबने अपना खज़ाना, जिनके पास बहुत रहता है, बड़ों के पास भेज दिया था। उनके छोटे के तो वो उड़ाकर ले जाएँगे, सब खतम कर देंगे वा तो रहेंगे, जब जीत होगी तब उनसे वापिस मिल सकते हैं। बहुतों ने रखा था बड़ी लड़ाई में। अमेरिका, इंग्लैण्ड, बड़ों के ये छोटे–2 थे, उन्हें अपना जो खज़ाना इनका बहुत बड़ा होता है, वो डिपॉज़िट(जमा राशि) वहाँ रखवाय लेते हैं। तो यहाँ फिर क्या है, ये हम जानते हैं। ये सब कुछ खतम होने का है ज़रूर; परन्तु शरीर निर्वाह के लिए भी कुछ सम्भाल रखनी है। शरीर निर्वाह करते हुए, हूबहू जैसे अज्ञान काल में भक्तिमार्ग में हम दो पैसा ईश्वर के अर्थ निकालते हैं और कोई पैसा, कोई दो पैसा, कोई फकीर को एक पैसा देगा, वही साहुकार रुपया फेंक देंगे। तो वो हम इस ख्याल से देते हैं, वो इस ख्याल से देते हैं– ईश्वर अर्थ हमको दूसरे

जन्म में मिलेंगे। ये इस समय में किया जाता है, ईश्वर अर्थ हमको भविष्य जन्म–जन्मांतर के लिए मिलेंगे। ये फर्क है! अभी इस फर्क का जिसको मालूम पड़े, तभी उनको बुद्धि में आएगा– कुछ हम जास्ती युक्ति से कहाँ–न–कहाँ से ऊँचा–2 हो करके जास्ती निकाल कर बजाते(बचाते) रहें। जितना बचावें इतना अच्छा है। फिर भी, बाप है। इसलिए कभी भी किसको ज़रूरत पड़े तो बाप फिर बैठा हुआ है। देखो, बाबा कहते हैं ना सब तरफ में– भई, किसको भी मदद चाहिएगा, हिम्मते बच्चे मददे बाप बैठे हुए हैं। तो भी वो देखते हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार। ये जो भी सेन्टर–वेन्टर खुलते रहते हैं, वो हम समझते हैं कि ड्रामा के प्लैन अनुसार यहाँ खुलने का था, यहाँ अभी खुला। जब खुल जाते हैं तब कह देते हैं– हाँ, ड्रामा के प्लैन अनुसार ये यहाँ खुला। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। तो नॉलेज है वण्डरफुल। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। ये तो कोई को भी पता नहीं है एकदम। तभी बाबा बच्चों को बार–2 कहते हैं कि जो कुछ भी लिखते हो ये अपनी मैगजीन में या कुछ, उनमें ... ऐसी बातें लिखो। कोई भी बातें होवें, थोड़ी ऐसी वाणी भरी, जैसे ये शास्त्री जी मर गया, ठक लिख देना चाहिए– दिस इज़ नथिंग न्यू। ये 5000 बरस भी ऐसे ताशकंद में ये पाकिस्तान का शास्त्री ने अपना शरीर छोड़ा था। भले कोई आवे पूछने के लिए। समझा ना! ये फलानी चीज़ हुई जिसको भारी कहा जाता है। दिस इज़ नथिंग न्यू– लिख देना चाहिए। ये तो हूबहू 5000 वर्ष पहले हुआ था; परन्तु अभी तलक तो कोई ने लिखा नहीं है या तो अख़बार वाले लेते नहीं या तो खर्चा नहीं करते हैं; पर भारी चीज़ ऐसे लिखते ही रहना चाहिए। कैसे हुआ था, आ करके पूछ सकते हो। बहुत मरते भी तो हैं ना बड़े–2 आदमी। नेहरु मरा, फलाना मरा। अभी और भी मरने वाले तो हैं ही। कोई ऐसे तो नहीं, कोई नहीं मरेंगे। बड़े नामी–ग्रामी, भले कोई ऐसे शंकराचार्य जैसा हो, बड़े–2 ये संन्यासी या ऐसे मरते हैं, बड़े–2 गवर्नर मरते हैं, नथिंग न्यू। कोई हार्टफेल हो जाते हैं, कोई क्या होते हैं वा जैसे ये चीन की लड़ाई ही लगी थी, ये मुसलमानों की, नथिंग न्यू। आज से 5000 बरस पहले एग्जैक्टली (ठीक यही) ऐसे लड़ाई लगी थी ये पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की। जो मनुष्य भले पूछने आवे ना कि उनको ड्रामा तो समझे ना। नहीं–2, समझते तो नहीं– ये है बरोबर सृष्टि का चक्र, सो फिरता है सो मस्ट रिपीट। अभी उनको ये पता नहीं है कि रिपीट कभी(कब) होता है, कितने बरस के बाद। वो उनको पता नहीं है; क्योंकि लाखों वर्ष दे दिया ना। कहेंगे, जैसे अभी कहते हैं अगर, हैं तो बनाने वाले एक,दो,तीन। उसमें भी सेन्सीबुल सबसे दिल्ली वाला देखने में आता है। तो बाबा कहेंगे– जो सीढ़ी हमको अच्छा (...), अभी अच्छी एकदम .. . कोई आ करके देवे, कुछ–न–कुछ बाबा निकालेंगे ज़रूर। ये नहीं है, ये नहीं है; परन्तु फिर भी, जो टीनों में अच्छी बनाकर दे, उनका नामबाला करेंगे कि भई, इनमें ज्ञान की धारणा अच्छी है जिसलिए ये ऐसा सीढ़ी बनाई है। अच्छा, जिस सीढ़ी से बच्चे बहुत ही शिक्षा देंगे, बहुतों का कल्याण होगा। तो मगज देख करके बनाने वाले जो हैं उनके ऊपर आशीर्वाद आएगी। तो सीढ़ी को पहले–2 अटेंशन देना चाहिए बच्चों को। सीढ़ी के ऊपर, ये तो है ही है त्रिमूर्ति, ये तो ज़रूर ही चाहिए। झाड़ भी बिल्कुल ही ज़ार है; क्योंकि गीता में है ही सारा परिचय इनका और इनका। ये सीढ़ी–वीढ़ी तो, फिर अभी इनको बढ़ाते रहते हैं और बाकी जो ... मुख्य चित्र हैं, जिनमें जैसे कि चिटचैट थोड़ी–2 होती है। तो चित्र जभी बनेंगे तो बड़े तो रखे जाएँगे बड़े–2 जगह में, छोटा फिर बच्चों को भी दे देंगे, जो माइयाँ बहुत अच्छी तरह से समझा सकेंगी। बिल्कुल बुद्धू भी उठा सके, बाबा युक्ति ऐसी रचते हैं, जो ये भी ऐसे ज्ञानी तू आत्मा बनाय बैठ करके, जो समझें ये माताएँ भी इतना समझा सकती हैं। (म्युज़िक बजा) मीठे सिकीलधे सर्विसएबुल रूहानी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट। (बच्चों ने कहा– गुडनाइट)